भारतीय संस्कृति में पुरुषार्थ का योगदान: बदलते प्रतिमान

परितोष कड़ेला, सहायक आचार्य, इतिहास, से.मु.मा राजकीय कन्या महाविद्यालय, भीलवाड़ा

भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम और समृद्ध संस्कृतियों में से एक है जिसका आधार धर्म, नैतिकता और समाज के सतत् विकास पर टिका है। इसमें पुरुषार्थ—धर्म अर्थ, काम और मोक्ष—मनुष्य जीवन के चार स्तंभ माने गए हैं। हालांकि,समय के साथ सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों में बदलाव के कारण पुरुषार्थ की परिभाषा और उसकी प्रासंगिकता के प्रतिमान भी बदले हैं। पुरुषार्थ का शाब्दिक अर्थ है पुरुष (मनुष्य) द्वारा किया गया प्रयास। यह केवल भौतिक या सामाजिक प्रयास तक सीमित नहीं है, बल्कि मानसिक और आध्यात्मिक विकास को भी समाहित करता है। धर्म: जीवन के नैतिक और सामाजिक आदर्श।अर्थ: भौतिक संपत्ति और संसाधनों का उपार्जन। काम: इच्छाओं और जीवन के सुखद पहलुओं की पूर्ति। मोक्ष: आध्यात्मिक मुक्ति और परम लक्ष्य। परंतु आज धर्म की परिभाषा अधिक व्यावहारिक और समावेशी हो गई है। अब धर्म का अर्थ केवल धार्मिक आस्था तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें मानवीयता, पर्यावरण संरक्षण,और व्यक्तिगत नैतिकता जैसे पहलू भी शामिल हैं। अर्थ का परंपरागत स्वरूप बदलकर समृद्धि के साथ सामाजिक जिम्मेदारी और संतुलित उपभोग पर केंद्रित हो गया है। काम का प्रतिमान भी आधुनिक संदर्भ में बदल गया है। आज यह कला, संगीत, खेल, और अन्य रचनात्मक कार्यों के माध्यम से आत्मसंतोष की भावना को भी समेटे हुए है। आज के युग में मोक्ष केवल आध्यात्मिक मुक्ति का लक्ष्य नहीं है, बल्कि मानसिक शांति, तनावमुक्त जीवन और आत्मविकास को भी इसमें शामिल किया गया है। योग,ध्यान और आत्म-चिंतन जैसे माध्यम इसके नए रूप बन गए हैं। पुरुषार्थ के ये चार स्तंभ आज भी भारतीय समाज की बुनियाद हैं। हालांकि, बदलते समय ने इन्हें नई परिभाषा और दृष्टिकोण दिया है। वर्तमान समय में पुरुषार्थ का योगदान केवल व्यक्तिगत सफलता तक सीमित नहीं है, बल्कि यह समाज की भलाई, पर्यावरण संरक्षण, और वैश्विक समस्याओं के समाधान में भी सहायक हो रहा है।